Shridhara Ashtakam

श्रीधराष्टकम्

Document Information

Text title : Shridhara Ashtakam 5

File name : shrIdharAShTakam5.itx

Category : deities_misc, gurudev, shrIdharasvAmI, aShTaka

Location : doc_deities_misc

Proofread by : Paresh Panditrao

Description/comments : shrIdharasvAmI stotrANi. shrIdharasandeshaH

Latest update : January 14, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 15, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीधराष्टकम्

श्रीधरगुरुवररूपमनाद्यं नौमि समाधिसमाहित वेद्यम् ।
निगमागमगतसारमपारं विद्वन्मानससौधविहारम् ॥ १॥

सत्य ज्ञानमनन्तमगाधं निजपदनतजनतैक सुबोधम् ।
निरवधिपरमानन्दविलोलं निधृतदयारसरञ्जितशीलम् ॥ २॥

भवसागरसन्तारकमेकं भवमोव्ययशिवरूपमशोकम् ।
मायातीतमनोहररूपं मायिनपहृत निजजनतापम् ॥ ३॥

जगदाकारविभान्तमनन्तं स्वेच्छामात्राद्विष्वमवन्तम् ।
योगिध्येयविनिर्मलतत्त्वं भोगागम्यविमुक्तममत्वम् ॥ ४॥

वाग्विभवातिग पावन चरितं निरुपमममित दयारसभरितम् ।
जगदाधारमदूरमुदारं परिहृत नतजन संसृतिभारम् ॥ ५॥

करुणापूरित सुविमलनेत्रं निर्मल भसितो धूलित गात्रम् ।
व्याघ्राजिनसंस्थित सुविधानं अविरल सुखसन्धान निदानम् ॥ ६॥

चिन्मुद्राङ्कित निजतनु भूषं धृत कोपीनविधानसुवेषम् ।
मायामोहंविलासनिवाशं भवहर परमामृतदं श्रीशम् ॥ ७॥

श्रुति मथनोत्थित परतरतत्त्वं मौनं व्याख्या प्रकटिततत्त्वम् ।
आश्रितपदजनहृदयानन्दं कलिमलहरवर परमानन्दम् ॥ ८॥

गुरुवरकृपया विलसित पद्यं गुरुसुतनिर्मित अष्टकमाद्यम् ।
भजति नरो यः शान्तस्वान्तः कामादीनां हृदि तस्यान्तः ॥ ९॥

ॐ तत् सत् ।

इति श्रीधराष्टकं सम्पूर्णम् ।
(सङ्ग्राहक – अय्याबुवा रामदासी)

Proofread by Paresh Panditrao

Shridhara Ashtakam

pdf was typeset on January 15, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*